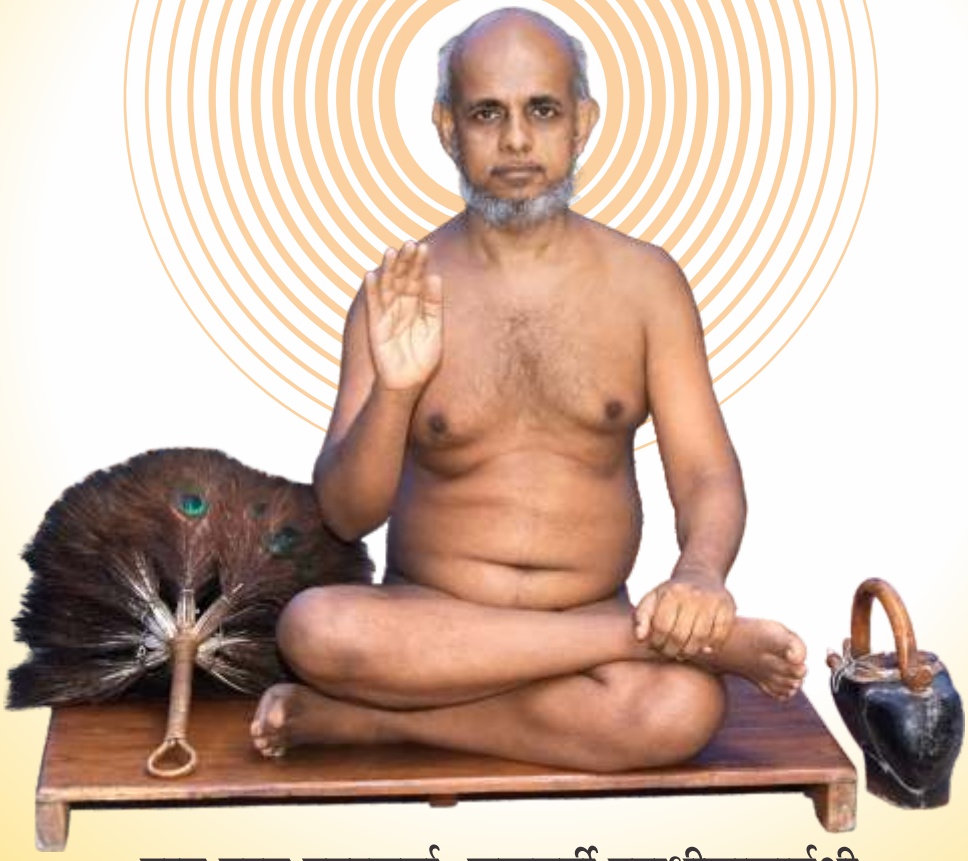

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद पंचपरमेष्ठी विधान

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला, जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

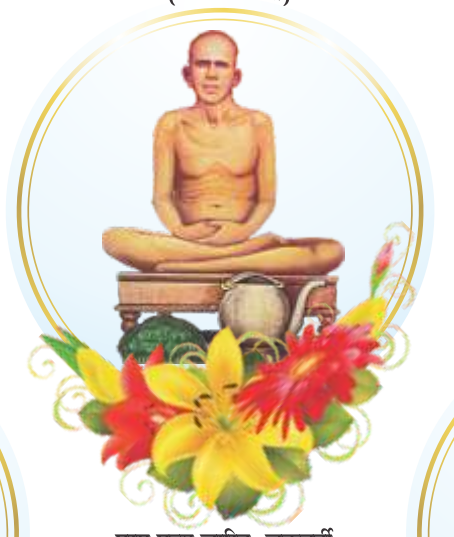

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद
पंचपरमेष्ठी विधान

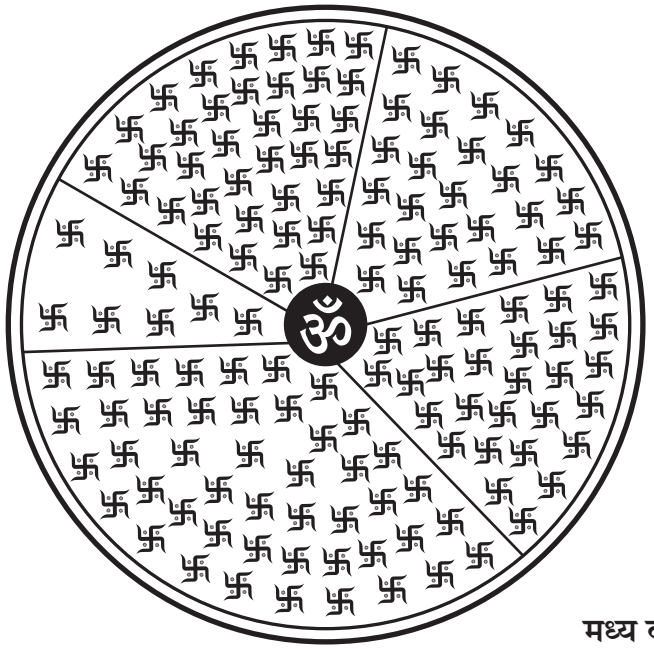

मध्य वलय ॐ
प्रथम वलय - 46
द्वितीय वलय - 08
तृतीय वलय - 36
चतुर्थ वलय - 25
पंचम वलय - 28
कुल वलय - 143

रचयिता :
प. पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य श्री विशदसागर जी

कृति - **विशद श्री रत्नत्रय विधान लघु**

रचयिता - प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण - प्रथम-2018, प्रतियाँ - 1000

सम्पादन - मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज

सहयोग - आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
ऐलक श्री विदक्ष सागर जी, क्षुल्लक श्री विसौम सागर जी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी

संकलन - ज्योति दीदी-9829076085, आस्था दीदी
सपना दीदी-9829127533, आरती दीदी-8700876822

कम्पोजिंग - आरती दीदी-8700876822

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जैन सेठी, जयपुर - 9413336017
2. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी-09810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी - 09416888879
4. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8561023344, 8114417253

पुण्यार्जक - 1. स्वरूप जैन धर्मपत्नि अशोक जैन, ऋषभ जैन
5-P.T.N., पीतम पुरा, दिल्ली
मो.: 9999923718

मुद्रक - बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्स्ट्रीज (बही खाते के निर्माता) एस.बी.बी.जे. के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8114417253, 8561023344

मूल्य - 20/- रु. मात्र

अर्चन के सुमन

संसार दुःखों का समूह है। दुःखों से बचने के लिए प्राणी हमेशा प्रयत्नशील रहता है। यह प्रयत्न कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल होते हैं। अनुकूल अर्थात् सम्यक् प्रयत्न ही दुःख दूर करने में समर्थ होते हैं। दुःखों का अंतरंगकारण हमारी राग–द्वेष रूप परिणति है एवं बाह्य कारण कर्मोदय है। कर्मोदय के अनुसार अनुकूल–प्रतिकूल निमित्त मिलते रहते हैं और जीव दुःख का वेदन करता रहता है इसलिए कवि ने लिखा है–

संसार में सुख सर्वदा काहूँ को न दीखे।
कोई तन दुखी, कोई मन दुखी, कोई धन दुखी दीखे।।

ऐसी स्थिति में लोगों को जिनधर्म से जुड़कर देव–शास्त्र–गुरु की पूजा,आराधना ही सर्वोपरि है। पुण्य संचय हो और इंसान सुखी और समृद्ध हो एवं सम्यक्त्व को प्राप्त कर परम्परा से रत्नत्रय का आराधन कर मोक्ष प्राप्त कर सके। इस हेतु चिंतन के बिखरे पुष्पों को समेटकर चित्त को चैतन्यता की ओर ले जाने के लिए ज्ञानवारिधि गुरुवर श्री विशदसागर जी महाराज ने 'लघु पंचपरमेष्ठी विधान'के माध्यम से शब्द पुंजों को सरल भाषा में संचित किया है। क्योंकि कहते है कि–

प्रभु भक्ति से नूर खिलता है।
गमे दिल को सरूर मिलता है।।
जो आता है सच्चे मन से द्वार पर।
उसे कुछ न कुछ जरुर मिलता है।।

आचार्य श्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुखमुद्रा प्रायः सभी का मन मोह लेती है। आचार्य श्री के कण्ठ में साक्षात् सरस्वती का निवास है। इसे भगवान का वरदान कहें या पूर्व पुण्योदय समझ में नहीं आता। आचार्य श्री को पाकर सारी जैन समाज गौरवान्वित है। आचार्य श्री के द्वारा अब तक 150 विधानों की रचना की जा चुकी है। आचार्य श्री का गुणगान करना तो कदाचित् संभव ही नहीं है। गुरुवर के चरणों में अंतिम यही भावना है कि–

जिनका दर्शन भवि जीवों में, सत् श्रद्वान जगाता हैं।
उपदेशामृत जिनका जग में, सद्धर्म की राह दिखाता है।।
उन विशद सिन्धु के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम चले आपके कदमों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।

– **ब्र. आरती दीदी** (संघस्थ आ. विशद सागर जी महाराज)

पंच परमेष्ठी पूजा (संस्कृत)

स्थापना

श्रीमज्जिनेन्द्र–वर–शासन–सार–भूतं।
पूज्यं नरामर–सुखेवर–नायकेश्च।।
ध्येयं मुनीन्द्र–गणनायक–वीतरागैः।
संस्थापयामि णवकार सुमन्त्र–राजं।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कार मन्त्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सार–शुद्ध–तीर्थ–भूत–वारिभिश्च–शुद्धकैः।
पापहारकैश्च चित्त–नन्दनैश्च निर्मलैः।।
वीतराग–भोग–भूमि–खेचरादि–शर्म्मदं।
संयजामहे मुदात्र मंत्र–राज–पंकजं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कार मन्त्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीघनादि–सार–कांत–चन्दनादि–केसरैः।
चित्त चोरकैश्च नेत्र–हारकैश्च सुन्दरैः।।
वीतराग–भोग–भूमि–खेचरादि–शर्म्मदं।
संयजामहे मुदात्र मंत्र–राज–पंकजं।।2।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कार मन्त्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

तंदुलैश्च पांडुरैरखंडितैश्च शोभितैः।
शालिजैश्च दीर्घकैश्च अक्षतैश्च भव्यकैः।।
वीतराग–भोग–भूमि–खेचरादि–शर्म्मदं।
संयजामहे मुदात्र मंत्र–राज–पंकजं।।3।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कार मन्त्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

चंपकादिकैश्च सार–केतकैश्च पाडलैः।
मालती–सुराजतादिजैश्च षट्–पदाश्रितैः।।
वीतराग–भोग–भूमि–खेचरादि–शर्म्मदं।
संयजामहे मुदात्र मंत्र–राज–पंकजं।।4।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कार मन्त्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

मोदकैश्च खज्जकैश्च क्षीरजैः सुवट्टकैः।
हेम–पात्र–संस्थितैश्च उज्वलैः सुव्यंजनैः।।

वीतराग-भोग-भूमि-खेचरादि-शर्म्मदं।
संयजामहे मुदात्र मंत्र-राज-पंकजं।।5।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कार मन्त्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दीपकैः कर्पूरजैः सुसार्प्पिजैश्च तैलजैः।
रत्नजैश्च अंधकार-नाशनैः प्रकाशकैः।।
वीतराग-भोग-भूमि-खेचरादि-शर्म्मदं।
संयजामहे मुदात्र मंत्र-राज-पंकजं।।6।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कार मन्त्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

धूपकैः सुगन्धकैर्दशांगकैर्मनोहरैः।
भव्यजीव-मोदकैः सुरासुरादि तोषदैः।।
वीतराग-भोग-भूमि-खेचरादि-शर्म्मदं।
संयजामहे मुदात्र मंत्र-राज-पंकजं।।7।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कार मन्त्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

नालिकेरकैश्च बीज-पूरकैश्च पूंगकैः।
आम्र-निम्बु-केलकैः सदा फलादिकैस्तथा।।
वीतराग-भोग-भूमि-खेचरादि-शर्म्मदं।
संयजामहे मुदात्र मंत्र-राज-पंकजं।।8।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कार मन्त्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

वारिगंध-शालिजैः प्रसूनकैः सुव्यंजनैः।
दीप-धूप-सत्फलैः सुवर्ण-कीर्ति-भाषितैः।।
वीतराग-भोग-भूमि-खेचरादि-शर्म्मदं।
संयजामहे मुदात्र मंत्र-राज-पंकजं।।9।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कार मन्त्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

।।प्रत्येक अर्घ्य दीयते।।

प्रत्येक पूजनम्

कल्याणपंचक कृतोदयमाप्तमीश-
मर्हन्तमच्युत चतुष्टभासुरांगम्।
स्याद्वादवागमृत-सिंधुशशांक कोटि-
मर्चे जलादिभिरनंतगुणालयं तम्।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तचतुष्टयसमवशरणादिलक्ष्मीविभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यम्!

कर्माष्टकेध्म चय मुत्पथ-माशु हुत्त्वा।
सद्ध्यानवन्हिविसरे स्वयमात्मवन्तम्।
निःश्रेयसामृतसरस्यथ सन्निनाय,
तं सिद्धमुच्चपददं परिपूजयामि।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टकर्मकाष्ठगणभस्मीकृतेसिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम्!

स्वाचार - पंचकमपि स्वमाचरंति,
ह्याचारयन्ति भविकान्-निजशुद्धि-भाजः।
तानर्चयामि विविधैः सलिलादिभिश्च,
प्रत्यूहनाशनविधौ निपुणान् पवित्रैः।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पंचाचारपरायणाय आचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम्।

अंगांग-बाह्यपरिपाठन लालसाना-
मष्टांगभानपरिशीलन - भावितानाम्।
पादारविंदयुगलं खलु पाठकानां,
शुद्धैर्जलादिवसुभिः परिपूजयामि।।4।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगपठनपाठनोद्यताय उपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम्।

आराधना सुखविलास-महेश्वराणां,
सद्धर्म्मलक्षणमयात्मविकस्वराणाम् !
स्तोतुं गुणान् गिरिवनादिनिवासिनां वै,
एषोऽर्घतश्चरणपीठभुवं यजामि।।5।।

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशप्रकारचारित्राराधक साधुपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम्।

सत्तोयैर्वर-गंध-तंदुल वरैः सत्पुष्प-जात्यादिजै-
नैवेद्यैर्वर दीप भासुर करैः फल्लौघ-धूपार्धकैः।।
संसारार्णव-तारकान्मुनिवरान् न्यायाधि-पारंगतान्।
तानर्घ प्रददामि पंच सुगुरून्-संसार दुःखांतकान्।।

ॐ ह्रीं अनादि सिद्ध मन्त्रेभ्यो अर्घ्यं।।

।। ॐ ह्रीं शतैक सप्त अठोतर, कमलोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जयमाला

परम गुण निधानान्, सप्त तत्त्व प्रदीपान्।
विमल जग विधातृन्, वांछितार्थ-प्रदातृन्।।
भव हरण सु सूरान्, केवल ज्योति भास्वान्।
विविध नय विदक्षान्, तान्प्रवंदे विपक्षान्।।1।।

(अनुष्टुप-छन्द)

नय - प्रमाण - कर्तारं, घाति - वेद - प्रघातकं।
केवल-ज्ञान-सत्सूर्यं, लोकालोकावलोकनं।।1।।
अनन्त-सौख्य-गृहं वन्दे, वन्दे देवाधिपं जिनं।
लक्ष्मी-द्वय-भोक्तारं, वन्दे विद्येश्वरं यमं।।2।।
सिद्धं सम्पूर्ण-सौख्याढ्यं, जन्म-मृत्यु-जरातिगं।
सुधराष्टमी-भूपं वा, जिननाथं भवांतकं।।3।।
कालानन्त - क्षयातीतं रोग - शोक - निवारकं।
सिद्धं सिद्धि-करं चाये, सर्व-सिद्धि-प्रदायकं।।4।।
स्वाचार्य प्रगणाधीशं, विश्वज्ञान-विपारगं।
महा-चारित्र-वाराशिं, शिष्य-लोक-विशारदं।।5।।
महा-रत्नत्रयागारं, धर्माधारं मदापहं।
सर्व-जीवोपदेष्टारं, गणनाथ-नमाम्यहं।।6।।
उपाध्यायं महाधीरं, महाज्ञानोपदेशकं।
अंग-पूर्व-खनिं वन्दे, शिष्य-वर्ग-प्रपाठकं।।7।।
ज्ञानाभ्यासं परं नित्यं, पंच-वृत्त-विदांवरं।
यथाख्यातं गृहं शुद्धं, वन्दे सद्धर्म-दीपकं।।8।।
स्वात्म-ध्यान-सदालीनं, मोन्यधारं दयानिधिं।
त्रैलोक्येशं गणाधीशं, श्वेत-कल्लोल-भावगं।।9।।
समता - भावना - गारं, पंचाचारमहागृहं।
विश्व-बोधं परं शान्तं, वन्दे साधुं-प्रमाकरं।।10।।

दोहा - जिनान सिद्धान् तथा सूरीन् पाठकान् साधुत्तमान्।
विशद पंच परम् देवं, भक्तितः संपूजये।।

ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

दोहा - तेनेदं क्रियते पूजा, विधानं पापहंपरं।
श्रीमत् संघ सानिध्यं, क्षिपामि पुष्पाक्षतं।।

।। पुष्पांजलि क्षिपामि ।।

पंच परमेष्ठी स्तवन

दोहा - तीन लोक में पूज्य हैं, परमेष्ठी जिन पाँच।
जिन की अर्चा कर विशद मिट जाये भव आँच।।

(चाल-छन्द)

यह लोक अनादि कहाये, ना इसको कोई बनाए।
इसमें जग जीव भ्रमाए, जो धर्म कर्म बिसराए।। 1।।
जो देव शास्त्र गुरू पाए, उनमें श्रद्धान जगाए।
फिर पंच परमेष्ठी ध्याये, वह विशद धर्म प्रगटाए।। 2।।
पहले अर्हत् को ध्याते, जो केवल ज्ञान जगाते।
फिर सिद्धों के गुण गाते, जो अष्ट गुणों को पाते।। 3।।
जो रत्नत्रय के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
हम आचार्यों को ध्याते, जो छत्तिस गुण को पाते।। 4।।
जो पच्चिस गुण के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
सब साधु ध्यान लगाते, निज आतम ज्ञान जगाते।। 5।।
जो परमेष्ठी को ध्याते, वह परमेष्ठी बन जाते।
फिर कर्म निर्जरा करते, अपने कर्मों को हरते।। 6।।
कई अर्हत् पदवी पाते, वह तीर्थंकर बन जाते।
फिर केवल ज्ञान जगाते, कई देव शरण में आते।। 7।।
वह समवशरण बनवाते, सब दिव्य देशना पाते।
हे भाई! श्रद्धा धारो, अपना श्रद्धान सम्हारो।। 8।।
हम यही भावना भाते, जिन पद में शीश झुकाते।
नित परमेष्ठी को ध्यायें, हम भावसहित गुण गायें।। 9।।
अनुक्रम से मुक्ती पावें, भवसागर से तिर जावें।
हम शिव सुख में रम जावें, इस भव का भ्रमण नशावें।। 10।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।।

पंच परमेष्ठी विधान पूजा

स्थापना

अर्हत् कर्म घातिया नाशी, अष्ट कर्म विरहित जिन सिद्ध।
जैनाचार्य पंच आचारी, उपाध्याय हैं जगत प्रसिद्ध।।
अंग पूर्व के धारी पावन, सर्वसाधु रत्नत्रय वान।
पंचपरम परमेष्ठी का हम, करते भाव सहित आह्वान।।

दोहा - महामंत्र का जाप नित, करता सकल समाज।
जिनकी अर्चा भाव से, करते हैं हम आज।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यों अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(मोतियादाम-छन्द)

नीर यह चढ़ा रहे भगवान, रोग जन्मादिक नशे प्रधान।
पंच परमेष्ठी का गुणगान, भाव से करते हे भगवान !।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते गंध सुगन्धी वान, मिटे मेरा भव रुज भगवान।
पंच परमेष्ठी का गुणगान, भाव से करते हे भगवान !।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत अक्षय वान, प्राप्त हो अक्षय सुपद महान।
पंच परमेष्ठी का गुणगान, भाव से करते हे भगवान !।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प से आए परम सुवास, कामरुज का हो जाए नाश।
पंच परमेष्ठी का गुणगान, भाव से करते हे भगवान !।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सुचरु यह लाए हम रस दार, क्षुधा रुज का होवे संहार।
पंच परमेष्ठी का गुणगान, भाव से करते हे भगवान !।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप यह धृत का लिया प्रजाल, मोह का नशे पूर्णतः जाल।
पंच परमेष्ठी का गुणगान, भाव से करते हे भगवान !।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नि में खेने लाए धूप, कर्म नश पाएँ सुपद अनूप।
पंच परमेष्ठी का गुणगान, भाव से करते हे भगवान !।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

सरस फल चढ़ा रहे भगवान, मोक्ष फल पाएँ महति महान।
पंच परमेष्ठी का गुणगान, भाव से करते हे भगवान !।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्ध्य, चढ़ाकर पाएँ सुपद अनर्घ्य।
पंच परमेष्ठी का गुणगान, भाव से करते हे भगवान !।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।
पंचपरमेष्ठी के चरण, वन्दन बारम्बार।।

शांतिधारा.....

दोहा - परमेष्ठी के चरण में, वन्दन बारम्बार।
पुष्पांजलि करते विशद पाने भव से पार।।

।। इत्याशीर्वादः क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा - पंच परम पद लोक में, पाँचों पूज्य त्रिकाल।
परमेष्ठी की आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(छन्द ताटंक)

ज्ञानावरण आदि चउ घाती, कर्मों का करते हैं नाश।
निज आतम का ध्यान लगाकर, करते केवल ज्ञान प्रकाश।।
क्षुधा तृषा आदिक अष्टादश, दोषों से जो पूर्ण विहीन।
दिव्य देशना करने वाले, पूर्ण रूप होते स्वाधीन।। 1।।
तीनों लोकों के ज्ञाता बन, होते शुभ अतिशयकारी।
जो अष्टादश सहस शील धर, हो जाते हैं अविकारी।।
सिद्ध अनन्तानन्त कहे जो, सिद्ध शिला के वासी हैं।
जिनका कोइ आदि अन्त नहीं, जो गुण अनन्त की राशि हैं।।2।।
पंचाचार पालने वाले, परमेष्ठी आचार्य कहे।
करवाते पालन जन-जन से, उनके कई उपकार रहे।।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, छत्तिस गुण के धारी हैं।
वो परम पूज्य सारे जग से, अरु जग में मंगलकारी हैं।। 3।।
जो द्रव्यभाव श्रुत के ज्ञाता, नित श्रुताभ्यास में लीन रहे।
मुनियों को श्रुत में लगा रहे, वे उपाध्याय गुरु श्रेष्ठ कहे।।
जो द्वादशांग के ज्ञाता हैं, शुभ पच्चिस गुण के धारी हैं।
हैं रत्नत्रय के शुभ साधक, जो अविकारी अनगारी हैं।। 4।।
हम सर्व साधुओं को ध्याते, जो विषयाशा के त्यागी हैं।
आरम्भ परिग्रह रहित साधु, शुभ जैन धर्म अनुरागी हैं।।
जो ज्ञान ध्यान में रत रहते, नित सम्यक् तप में लीन रहे।
शुभ वीतरागता के धारी, अनगारी अपने संत कहे।। 5।।

दोहा - परमेष्ठी जिन पंच के, पद हैं पंच महान।
भाव सहित जिनका विशद, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - परमेष्ठी का भाव से, करते हैं जो ध्यान।
अल्प समय में जीव वे, पाते पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।।

अथ प्रथम कोष्ठ

अरहंत के 46 मूलगुण के अघ्य

पावें छियालिस मूलगुण, श्री जिनवर अर्हन्त।
पुष्पांजलि करते विशद, हो कर्मों का अन्त।।

।। अथ प्रथम कोष्ठपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

10 जन्म के अतिशय

(चाल)

है जन्म का अतिशय भाई, तन 'स्वेद रहित' सुखदायी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।। 1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आहार प्रभू जी पाते, किन्तू 'निहार' न जाते।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है 'श्वेत रक्त' शुभकारी, वात्सल्य की महिमा धारी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'समचतुष्क संस्थान' पावें, वह सुन्दरता प्रगटावें
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'वज्रवृषभ संहनन' धारी, होते हैं जिन अविकारी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं वज्र वृषभ नाराच संहनन सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अतिशय स्वरूप' जिन पाते, इस जग में पूजे जाते।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है 'तन सुगन्ध' सुखदायी, फैले जिसकी प्रभुताई।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'इकसहस आठ' शुभकारी, होते लक्षण के धारी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं एक हजार आठ लक्षण सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'बल अतुल्य' प्रगटाएँ, ना कभी पराजय पाएँ।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'हित मित प्रिय जिन की वाणी', है जग जन की कल्याणी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं प्रिय हित वचन सहजातिशयधारक सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दस ज्ञान के अतिशय

(पाईता-छन्द)

होवे 'सुभिक्षता भाई, सौ योजन' में सुखदायी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशत्चतुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशय सहित श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो 'गगन गमन' शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।।12।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन सहजातिशय सहित श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु के 'मुख चार' दिखावें, भवि प्राणी दर्शन पावें।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।।13।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुख सहजातिशय सहित श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते 'अदया के त्यागी', तीर्थंकर जिन बड़भागी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।।14।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव सहजातिशय सहित श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'उपसर्ग नहीं' हो पावें, जब केवल ज्ञान जगावें।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव सहजातिशय सहित श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ना होते कवलाहारी', केवल ज्ञानी अनगारी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।।16।।

ॐ ह्रीं कवलाहार सहजातिशय सहित श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'प्रभु सब विद्याएँ पाए', ईश्वर अतएव कहाऐ।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।।17।।

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व सहजातिशय सहित श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'नख केश वृद्धि ना पाते', जब केवल ज्ञान जगाते।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।।18।।

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व सहजातिशय सहित श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अनिमिष दृग पावें' स्वामी, प्रभु होते अन्तर्यामी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।।19।।

ॐ ह्रीं अक्ष स्पंदरहित सहजातिशय सहित श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ना पड़ती जिन की छाया', है केवल ज्ञान की माया।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।।20।।

ॐ ह्रीं छाया रहित सहजातिशय सहित श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देवोंकृत अतिशय

(चौपाई-छन्द)

'अर्धमागधी भाषा' जानो, अतिशय देवोंकृत पहिचानो।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

'मैत्री भाव' जगे सुखदायी, जग जीवों में मंगलदायी।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व मेत्रीभाव देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'फल फलते सब ऋतु' के भाई, प्रभु अतिशय पाते शिवदायी।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(पाइता-छन्द)

'भू दर्पणवत्' हो जावे, जहाँ प्रभु के पद पड़ जावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतम प्रतिमा रत्नमयी देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'वायू सुगन्ध' सुखदायी, चलती है मंगलदायी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।25।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'जग में आनन्द' समावे, आगमन प्रभु का पावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानन्दकारक देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'भूगत कंटक' हो जाते, जिन के विहार में आते।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'हो गंधोदक की वृष्टी', हो जाय हर्षमय सृष्टी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।28।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोतक वृष्टि धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'पद तल में कमल' रचाते, होवे विहार सुर आते।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।29।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतल रचित स्वर्ण कमल देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'हो गगन सुनिर्मल' भाई, है देवों की प्रभुताई।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।30।।

ॐ ह्रीं सर्वदिशा निर्मल देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब 'मेघ धूम खो जावे', दिश निर्मलता को पावे।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।31।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'आकाश में जयजय' कारे, सुर आके बोलें प्यारे।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।32।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'शुभ धर्म चक्र' मनहारी, ले यक्ष चले शुभकारी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।33।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वसु 'मंगलद्रव्य' सजावें, प्रभु की महिमा को गावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।34।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपुनीतातिशय धारक श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

सोरठा

'तरु अशोक' सुखदाय, शोक निवारी जानिए।
प्रातिहार्य कहलाय, समवशरण की सभा में।।35।।

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष महाप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ 'सिंहासन' होय, रत्न जड़ित सुंदर दिखे।
अधर तिष्ठते सोय, उदयाचल सों छवि दिखे।।36।।

ॐ ह्रीं सिंहासन महाप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'पुष्पवृष्टि' शुभ होय, भांति-भांति के कुसुम से।
महा भक्तिवश सोय, मिलकर करते देव गण।।37।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्टवृष्टि महाप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'दिव्य ध्वनि' सुखकार, सुने पाप क्षय हो भला।
पावैं सौख्य अपार, सुन नर पशु सब जगत के।।38।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि महाप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'चौंसठ चँवर' ढुरांय, प्रभु के आगे देवगण।
भक्तिसहित गुण गाय, अतिशय महिमा प्रकट हो।।39।।

ॐ ह्रीं चामर महाप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त सु भव दर्शाय, 'भामण्डल' निज कांति से।
महा ज्योति प्रगटाय, कोटि सूर्य फीके पड़ें।।40।।

ॐ ह्रीं भामण्डल महाप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'देव दुंदुभि नाद', करें देव मिलकर सुखद।
करें नहीं उन्माद, समवशरण में जाय के।।41।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि महाप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जड़ित सुनग 'तिय छत्र', तीन लोक के प्रभू की।
दर्शाते सर्वत्र, महिमाशाली है कहा।। 42।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय महाप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(सखी-छन्द)

हम 'ज्ञानावरण' नशाएँ, फिर केवल ज्ञान जगाएँ।
हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।43।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुण प्राप्त श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हे 'दर्शावरण' के नाशी, प्रभु केवल दर्श प्रकाशी।
हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।44।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण प्राप्त श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हम 'मोह कर्म' विनसाएँ, फिर सुख अनन्त प्रगटाएँ।
हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।45।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण प्राप्त श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अब 'कर्मान्तराय' नशाएँ, प्रभु बल अनन्त प्रगटाएँ।
हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।46।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण प्राप्त श्री अर्हन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - छियालिस गुण धारी प्रभू, होते हैं अरहंत।
शिवपद के राही बनें, अपनायें शिव पंथ।।47।।

ॐ ह्रीं सर्वघातिकर्म विनाशक षट् चत्वारिंशत मूलगुण प्राप्त श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अथ द्वितिय कोष्ठ

दोहा - आठ मूलगुण सिद्ध के, होते जो अशरीर।
पुष्पांजलि करते यहाँ, मिट जाए भव पीर।।

।। द्वितिय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

सिद्धों के 8 मूलगुण के अर्घ्य

(चाल)

प्रभु 'ज्ञानावरणी कर्म' नाश, फिर करें ज्ञानकेवल प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन 'कर्म दर्शनावरण' नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब करें 'वेदनीय' का विनाश, गुण अव्यावाध में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु 'मोह कर्म' से कहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन 'आयु कर्म' का कर विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।5।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु 'नाम कर्म' करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।6।।

ॐ ह्रीं नाम कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ना 'गोत्र कर्म' का रहा काम, गुण पाएँ अगुरुलघु रहा नाम।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु 'अन्तराय' करके विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - आठों कर्म विनाश कर, गुण प्रगटाएँ आठ।
परम सिद्ध के भक्त बन, पाते ऊँचे ठाठ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अथ तृतिय कोष्ठ

दोहा - परमेष्ठी आचार्य गुरू, पाले पंचाचार।
पुष्पांजलि कर पूजते, जिन पद बारम्बार।।

।। तृतिय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

आचार्यों के 36 मूलगुण के अर्घ्य

द्वादश तप के अर्घ्य

(चाल छन्द)

जो त्याग करें 'आहारा', उनने अनशन तप धारा।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप 'ऊनोदर' के धारी, होते हैं कम आहारी।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप 'व्रत परिसंख्यान' के धारी, संकल्प करें अनगारी।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'रस त्याग' सुतप के धारी, रस छोड़ें हो अविकारी।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप 'विविक्त शैय्याशन' धारी, हों अनाशक्त अनगारी।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं विविक्त शय्याशन तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप 'कायोत्सर्ग' के धारी, तजते ममत्व गुणधारी।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप 'प्रायश्चित' जो पाते, वह अपने दोष नशाते।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि 'विनय सुतप' के धारी, इस जग में मंगलकारी।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं विनय तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप 'वैय्यावृत्ती' धारें, वे संयम रत्न सम्हारें।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्ती तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप 'स्वाध्याय' के धारी, चिन्तन करते अनगारी।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'व्युत्सर्ग' सुतप जो पावें, वे तन से नेह घटावें।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं 'ध्यान सुतप' के धारी, चिन्ता रोधी अविकारी।
हम गुरु आचार्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश धर्म के अर्घ्य

(चाल छन्द)

जो क्रोध कषाय नशाते, वे 'क्षमाधर्म' प्रगटाते।
आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी।।13।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मद को पूर्ण विनाशें, वे 'मार्दव धर्म' प्रकाशें।
आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी।।14।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो हैं माया के त्यागी, वे 'आर्जव' धर्मानुरागी।
आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी।।15।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मन से लोभ हटावें, वे 'शौच धर्म' प्रगटावें।
आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी।।16।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं 'उत्तम सत्य' के धारी, ज्ञानी मुनिवर अनगारी।
आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी।। 17।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो नहीं असंयम करते, वे 'संयम' में आचरते।
आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी।। 18।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'इच्छा निरोध' के धारी, तप धारी हों अनगारी।
आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी।। 19।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो सर्व परिग्रह त्यागें, वे त्याग धर्म में लागें।
आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी।। 20।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो पूर्ण राग विनशावें, आकिन्चन धर्म जगावें।
आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी।। 21।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिन्चन धर्म धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो आश्रव भाव ना पावें, वे ब्रह्मचर्य प्रगटावें।
आचार्य धर्म के धारी, तव चरणों ढोक हमारी।। 22।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म धारक आचार्य परमेष्ठीभ्यो मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचाचार के अर्घ्य

(मोतियादाम छन्द)

साधु जो पाएँ ''दर्शनाचार'', कहाएँ परमेष्ठी आचार्य।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।। 23।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पालते हैं जो ''ज्ञानाचार'', विशद परमेष्ठी वे आचार्य।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।। 24।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धारते ऋषि ''चारित्राचार'', धर्म का निशदिन करें प्रचार।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।। 25।।

ॐ ह्रीं चारित्राचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धारने वाले ''वीर्याचार'', गुरू हैं जग में मंगलकार।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।। 26।।

ॐ ह्रीं वीर्याचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुतप पाले जो ऋषि अनगार, कहाएँ वे पावन आचार्य।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।। 27।।

ॐ ह्रीं तपाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन गुप्ति के अर्घ्य

(मोतीयादाम-छन्द)

संत जो हैं ''मन गुप्ती'' वान, करें आचार्य जगत कल्याण।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।। 28।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्ती प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''वचन गुप्ती'' धारी ऋषिराज, करें आचार्य सफल सब काज।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।। 29।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्ती प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''काय गुप्ती'' धारी जिन संत, करें आचार्य कर्म का अंत।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।। 30।।

ॐ ह्रीं कायगुप्ती प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् आवश्यक के अर्घ्य

(सखी-छन्द)

जो 'समता' हृदय जगाएँ, वे कर्म निर्जरा पाएँ।
आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी।। 31।।

ॐ ह्रीं समता आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'वन्दन' आवश्यक धारी, होते बहु महिमा कारी।
आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी।। 32।।

ॐ ह्रीं वन्दना आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'स्तुति' आवश्यक पावें, जिनवर की महिमा गावें।
आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी।। 33।।

ॐ ह्रीं स्तुति आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'स्वाध्याय' आवश्यक धारी, हैं वीतराग अनगारी।
आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी।। 34।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'प्रतिक्रमण' करवावें, अपना कर्त्तव्य निभावें।
आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी।।35।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि ''कायोत्सर्ग'' लगावें, आचार्य सुपद को पावें।
आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी।।36।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग आवश्यक गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनिवर छत्तिस गुण पायें, आचार्य सुगुरु कहायें।
आचार्य जगत उपकारी, जिन पद में ढोक हमारी।।37।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशत मूलगुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अथ चतुर्थ कोष्ठ

दोहा - परमेष्ठी उपाध्याय के, गुण गाए पच्चीस।
पुष्पांजलि करते विशद, चरण झुकाते शीश।।

।। चतुर्थ कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

उपाध्याय परमेष्ठी के 25 मूलगुण

ग्यारह अंग के अर्घ्य (चौपाई-छन्द)

कथन करे आचार का भाई, ''आचारांग'' कहा शिवदायी।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।1।।

ॐ ह्रीं आचारांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''सूत्र कृतांग'' सूत्र में जानो, कथन करे आगम का मानो।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।2।।

ॐ ह्रीं सूत्र कृतांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्थानों की चर्चा भाई, ''स्थानांग'' में श्रेष्ठ बताई।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।3।।

ॐ ह्रीं स्थानांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्रव्यादिक का कथन बताया, ''समवायांग'' शास्त्र में गाया।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।4।।

ॐ ह्रीं समवायांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''व्याख्या प्रज्ञप्ती'' शुभकारी, है विज्ञान मयी मनहारी।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।5।।

ॐ ह्रीं व्याख्या प्रज्ञप्ती अंग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री जिन का वैभव दर्शाए, ''ज्ञातृधर्मकृतांग'' कहाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।6।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृकृथांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रावक की चर्चा बतलाए, ''उपाशकाध्यानांग'' कहाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।7।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्यानांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''अतःकृत दशांग'' कहलाए, उपसर्ग विजय की महिमा गाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तः कृद्दशांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''अनुत्तरोपपादिक दशांग'' कहाए, कथन अनुत्तर का शुभ आए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।9।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपादकदशांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रश्नोत्तर जिसमें बतलाए, ''प्रश्नव्याकरण'' अंग कहाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।10।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''विपाकसूत्र'' शुभ अंग कहाए, पुण्य पाप का फल बतलाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी।।11।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांग गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौदह पूर्व के अर्घ्य

(चाल छन्द)

''उत्पाद पूर्व'' कहलाए, उत्पाद स्वरूप बताए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।।12।।

ॐ ह्रीं उत्पाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''अग्रायणीय पूर्व'' कहाए, स्व समय कथन बतलाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।।13।।

ॐ ह्रीं अग्रायणी पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञानों का वर्णन कारी, है ''ज्ञान प्रवाद'' शुभकारी।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 16।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो सत्यासत्य बताए, वह ''सत्य प्रवाद'' कहाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 17।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''आतम प्रवाद'' से जानो, शुभ आत्म द्रव्य पहिचानो।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 18।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो कर्म बन्ध को गाए, वह ''कर्म प्रवाद'' कहाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 19।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है पापों का परिहारी, ''प्रत्याख्यान पूर्व'' शुभकारी।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 20।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''विद्यानुवाद'' में भाई, विद्या मंत्रों की गाई।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 21।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रवि चंद नक्षत्र बताए, ''कल्याण बाद'' कहलाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 22।।

ॐ ह्रीं कल्याणनुवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ ''प्राणवाद'' में भाई, प्राणों की कथनी गाई।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 23।।

ॐ ह्रीं प्राणानुवाद पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ काव्य शिल्प विद्याएँ, सब ''क्रिया विशाल'' में आएँ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 24।।

शुभ ''लोक बिन्दु'' कहलाए, व्यहार अष्ट बतलाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 25।।

ॐ ह्रीं लोकबिन्दुसार पूर्व गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ ग्यारह अंग बताए, पूरव चौदह कहलाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई।। 26।।

ॐ ह्रीं पंचविंशति गुण प्राप्ताय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अथ पंचम कोष्ठ

दोहा - रत्नत्रय धारी मुनी, गुण जिनके अठबीस।
जिनकी अर्चा कर रहे, झुका चरण में शीश।।

।। पंचम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

साधू के 28 मूलगुण

(चौपाई-छन्द)

परम ''अहिंसा व्रत'' के धारी, साधू होते हैं अनगारी।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।। 1।।

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''सत्य महाव्रत'' धारी गाए, पावन मोक्ष मार्ग अपनाए।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।। 2।।

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''व्रताचौर्य'' के धारी जानो, संयम पालन करते मानो।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।। 3।।

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''ब्रह्मचर्य व्रत'' धारी गाए, शिवमग चारी आप कहाए।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।। 4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''परिग्रह'' चौबिस भेद बताए, जिससे विरहित साधू गाए।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।। 5।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''ईर्या समिति'' के धारी गाए, साधू रत्नत्रय को पाए।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्या समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''भाषा समिति'' के धारी जानो, अविकारी साधू हों मानो।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।7।।

ॐ ह्रीं भाषा समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते ''समिति ऐषणा'' धारी, रत्नत्रय धारी अनगारी।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।8।।

ॐ ह्रीं ऐषणा सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''समिति आदान निक्षेपण'' गाई, साधू पालन करते भाई।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।9।।

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि ''व्युत्सर्ग समिति'' के धारी, भवि जीवों के करुणाकारी।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।10।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(मोतियादाम-छन्द)

इन्द्रिय ''स्पर्शन'' दुखकार, विजय करते जिस पे अनगार।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।11।।

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधु हों ''रसना'' के जयकार, साधना करते हो अविकार।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।12।।

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''घ्राण इन्द्रिय'' के मुनि जयवान, करें निज पर का जो कल्याण।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।13।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''चक्षु इन्द्रिय'' पर विजय विशेष, करें धर परम दिगम्बर भेष।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।14।।

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधु ''कर्णेन्द्रिय के जयवान'', लोक में जो हैं पूज्य महान।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।15।।

ॐ ह्रीं कर्णेइन्द्रिय विजयी श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधु होते हैं ''समतावान'', करें निज आतम का नित ध्यान।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।16।।

ॐ ह्रीं समता आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''वन्दना आवश्यक'' कर्तव्य, पालते मुनिवर हैं जो भव्य।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।17।।

ॐ ह्रीं वन्दना आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधु ''स्तुति'' गुण पालें आप, नशाने वाले जग के पाप।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।18।।

ॐ ह्रीं स्तुति आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करे मुनिवर नित ''प्रत्याख्यान'', विशद करते निज आतम ध्यान।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।19।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रहा गुण ''प्रतिक्रमण'' शुभकार, क्षमा के धारी मुनि अनगार।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।20।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धारते हैं मुनि ''कायोत्सर्ग'', सहें परिषय मुनिवर उपसर्ग।
चढ़ाते जिन पद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।21।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग आवश्यक गुण प्राप्ताय श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि ''केशलुंच'' गुणधारी, होते पावन अविकारी।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।।22।।

ॐ ह्रीं केशलुंचन गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि ''चेल रहित'' कहलाए, वस्त्रों से राग हटाए।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।।23।।

ॐ ह्रीं वस्त्रत्याग गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि ''अस्नान'' गुण धारी, होते हैं करुणाकारी।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।। 24।।

ॐ ह्रीं अस्नान गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''क्षिति शयन'' मूलगुण पाते, भोगों से राग घटाते।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।। 25।।

ॐ ह्रीं भूमिशयन गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दातुन ''मन्जन के त्यागी'', मुनि मुक्ती पद अनुरागी।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।। 26।।

ॐ ह्रीं अदन्तधावन गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि ''एक भुक्ति'' के धारी, संयम पालें अविकारी।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।। 27।।

ॐ ह्रीं एक भुक्ति गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधू ''स्थित आहारी'', होते हैं ब्रह्म विहारी।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।। 28।।

ॐ ह्रीं स्थितिभुक्ति गुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अट्ठाइस मूलगुण पालें, साधू जिन धर्म सम्हाले।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।। 29।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय जाप -

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा - अर्हसिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय मुनिराज।
जयमाला गाते यहाँ, जिनकी हम सब आज।।

चौपाई

जय अरहंत देव जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।
चार घातिया कर्म नशाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए।।

जो हैं अष्ट कर्म के नाशी, होते हैं सिद्धालय वासी।
नित्य निरंजन हैं अविनाशी, जो हैं चेतन सुगुण प्रकाशी।।1।।
कहे गये जो पंचाचारी, छत्तिस मूलगुणों के धारी।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, परमेष्ठी आचार्य निराले।।
उपाध्याय आगम के ज्ञाता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
ज्ञान ध्यान संयम तप धारी, सर्व परिग्रह के परिहारी।। 2।।
साधू वीतरागता पाए, विषयाशा से रहित कहाए।
जो आरम्भ परिग्रह त्यागी, होते हैं आतम अनुरागी।।
रत्नत्रय युत धर्म कहाए, वस्तु स्वभाव का ज्ञान कराए।
दश लक्षण संयुक्त जानिए, परम अहिंसामयी मानिए।। 3।।
होते स्वयं धर्म के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
भव्य जीव सब जिनको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जिनकी अर्चा है मनहारी, पूजा भक्ती हो शुभकारी।
करने वाले पुण्य कमाएँ, धर्म भावना हृदय जगाएँ।। 4।।
पंच परमेष्ठी को जो ध्याएँ, वह भी परमेष्ठी पद पाएँ।
दर्शज्ञान चारित के धारी, कर्म निर्जरा करते भारी।।
कर्म घातिया आप नशाएँ, पावन केवलज्ञान जगाएँ।
कर्म नाश कर शिव पद पाएँ, सिद्ध शिलापर धाम बनाएँ।। 5।।

दोहा - परमेष्ठी त्रय लोक में, गाए पूज्य त्रिकाल।
जिन पद वन्दन कर रहे, होकर के नतभाल।।

ॐ ह्रीं परमार्थ प्रकाशक श्री अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठी जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - नमस्कार पंचाग हम, परमेष्ठी पद आज।
''विशद'' भाव से कर रहे, पाने शिव स्वराज।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।।

श्री पंचपरमेष्ठी चालीसा

तीन लोक से पूज्य हैं, अर्हतादि नव देव।
मन वच तन से पूजते, उनको विनत सदैव।।
णमोकार महामंत्र है, काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ती जाप से, बनें जीव अर्हन्त।।

काल अनादी लोक बताया, मध्य लोक जिसमें शुभ गाया।। 1।।
भरत क्षेत्र जिसमें शुभ जानो, आर्य खण्ड पावन पहिचानो।। 2।।
पंच परमेष्ठी पावन गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।। 3।।
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे।। 4।।
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी।।5।।
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।। 6।।
दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए।। 7।।
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए।। 8।।
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए।। 9।।
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्द्रों से पूजे जाते।। 10।।
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग से रहे निराले।। 11।।
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते।। 12।।
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए।। 13।।
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की प्रभु भाई।। 14।।
आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।। 15।।
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए।। 16।।
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते।। 17।।
पंचाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।। 18।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले।। 19।।
आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित दे दोष नशाते।। 20।।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी।। 21।।

द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।। 22।।
ज्ञानाभ्यास करें जो भाई, संतों को शिक्षा दें भाई।। 23।।
द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो।। 24।।
रत्नत्रयधारी कहलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए।। 25।।
दर्श-ज्ञान-चारित के धारी, साधु होते हैं अनगारी।। 26।।
विषयाशा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो।। 27।।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते।। 28।।
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी।। 29।।
पंचमहाव्रत धारी जानो, पंचसमितियाँ पाले मानो।। 30।।
पंचेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले।। 31।।
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई।। 32।।
महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया।। 33।।
अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई।। 34।।
सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया।। 35।।
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी।। 36।।
श्वानादि पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए।। 37।।
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए।। 38।।
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए।। 39।।
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए।। 40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
विशद गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ।।
धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप।।

जाप - ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

पंच परमेष्ठी की आरती

अर्हत् सिद्धाचार्य हैं, उपाध्याय मुनिराज हैं।
परमेष्ठी जिन पांचो की शुभ, आरती गाते आज हैं।।टेक।।
प्रथम आरती अर्हंतों की, केवल ज्ञान के धारी जी-2।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, पावन हैं अविकारी जी-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।1।।
अष्ट कर्म के नाशी पावन, सिद्ध प्रभु कहलाए जी-2।
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुखानन्त जो पाए जी-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।2।।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, होते पंचाचारी जी-2।
छत्तिस मूलगुणों को पाते, होते हैं अविकारी जी-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।3।।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह सब, पच्चिस गुण प्रगटाते हैं-2।
ज्ञान ध्यान तप रत मुनियों को, पावन ज्ञान सिखाते हैं-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।4।।
विषयाशा के त्यागी मुनिवर, संगारम्भ से हीन रहे-2।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र धर, वीतराग जिन संत कहे-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।5।।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्यायें जी-2।
'विशद' आरती करके पद में, सादर शीश झुकाएँ जी-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।6।।

पंच परमेष्ठी मंत्र–महिमाष्टक

यः सर्व दुःख दलने किल कल्पवृक्षः,
चिन्तामणिः शुभ मनोरथ पूरणे सः।
कन्दर्प दर्प दहनैक विधौ दवाग्निः,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मंत्रः।।1।।

सर्वागमं श्रुत समुद्र सुधेन्दु-साराः,
चारित्र चन्दन वनं सदनं सुखानाम्।
कल्याण कुन्दन खनिर् दमनं दराणां,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मंत्रः।।2।।

संसार सागर निमज्जद-पूर्व नौका,
सिद्धौषधिर् विविध पाप विनाशने यः।
निःशेष लब्धि बल बोध तरोश्च बीजं,
लोक त्रये विजयते, परमेष्ठि मन्त्रः।।3।।

सूर्यः सहस्त्रः किरणैर् हरति तमांसिः,
सिंहो यथा गज गणाश्च नखैर् निहन्ति।
संसार वर्ति दुरितानि तथैष मूर्ति,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मंत्रः।।4।।

पद्मा करे रुचिर रश्मिरिवौषधीशः,
शीघ्रं प्रबोधयति निद्रित-कैरवाणि।
अन्तः सुषुप्त गुण पद्म दलानि चैवं,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मन्त्रः।।5।।

भू-मण्डलेषु शुभ वस्तु न विद्यते तद्,
ध्यानेन यस्य ननु यन् नहि साधध्नीयम्।
दुःखं न तद् भवति यस्य विनाशनं नो,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मंत्रः।।6।।

श्रीपाल देव धरणेन्द्र सुदर्शनाद्याः,
पल्ली पतिश्च शिव कम्बल शम्बलाद्याः।
ध्यात्त्वा हि यं पद्मगुः परम पवित्रं,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मंत्रः।।7।।

भक्त्या दधाति हृदि यो ननु मंत्र राजं,
दिव्यां गतिं व्रजति नूतन मुक्ति मोदं।
चूर्णी करोति भव संचित कर्म शैलं,
लोक त्रये विजयते परमेष्ठि मंत्रः।।8।।

आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
धन्य है जीवन धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।